PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES Vol 1, Issue 2

हिंदी कहानियों में मानवीय संवेदनाओं की प्रक्रिया

प्रा. प्रशांत दत्तात्रय पात्रे
(हिंदी - विभाग)
शिवजागृती महाविद्यालय, नळेगाव महाराष्ट्र

मानव के अपने तथा अन्य के समझाने और समझने के प्रयास को मनोविज्ञान की संज्ञा से अभिहित किया जाता है । मानव के कार्य व्यापार क्रिया कलाप तथा उसके आचरण एवं इन सब के प्रति किए गये व्यवहार एवं उसके मन में उठी प्रक्रियाओं का अध्यायन एवं विश्लेषण इसमें किया जाता है । तथा मन का मनोविश्लेषण भी इसमें किया जाता है । मन का मनोविश्लेषण मानव की अकर्मण्यता उसके मास्तिष्क के उद्वेग तथा कार्यतत्परता के पीछे जागरूक रहनेवाली प्रेरणात्मक शक्तियाँ तथा कार्य कारण के संबंधो को शोध कर, उनका विश्लेषण प्रस्तुत करता है । ये शक्तियाँ मानव की चेतनाहिन अवस्था में क्रियाशील रहती है । '' अतः मनुष्य के मनोभावों शारीरिक अनुभावों के कारणों की छानबीन कर, उनके मानसिक व्यापारों का विश्लेषण करना ही मनोविश्लेषण के अंतर्गत आता है ।''

इस विवेचन के आधारपर यह कहा जा सकता है कि मनुष्य के व्यक्तित्व का संचलन कनेवाला उसके शरीर का मुख्य भाग अवचेतन मास्तिष्क है । इस अवचेतन मास्तिष्क में निवास करनेवाली वृतियाँ प्रेरक होती है, इसलिए चेतन पर वर्चस्व स्थापित करना अपना परम ध्येय ही नही समझती वरन उसके लिए भरसक प्रयास करती है । कभी तो इन प्ररेक शक्तियों में एवं चेतन मास्तिष्क में संघर्ष चलता रहता है । और चेतन अपने ही भाग में छिप कर रह जाता है, पर बहुधाये स्वार्थीप्रवृत्तियाँ एवं प्रेरक शक्तियाँ चेतन पर एकाएक अधिकार प्राप्त नही कर पाती है । इस हेतु ये चेतन के राज्य में अपना रूप परिवर्तित कर सैंध लगाने का प्रयास कर घूस बैठती है, वहाँ मनुष्य के दैनिक व्यवहार को अपनी इच्छानुसार परिवर्तीत करती रहती है । अतः अचेतन एवं अवचेतन के संघर्ष की सीमाओं के मध्य ही आज के मानव की दिनचर्या सीमित है ।

मानवीय संवेदनाओं को समझने के लिए मानव जाती को विभक्त कर - उसका अध्ययन करना आवश्यक है । मानव तथा प्रकृति, पुरूष - नारी की प्रकृति का विकास के अध्ययन से उनके मन से निर्मीत मानवीय अवस्थाओं तथा संवेदनाओं का हमें पता चलता है । मानवीय मस्तिष्क से उत्पन्न होनेवाले क्रिया व्यापार को मानवीय संवेदना कहा जाता है । चेतना अवस्था में हमें अपनी मानसिक दूविधाओं के मुल कारण का ज्ञान नही रहता है । जहाँ ये मुल कारण अदृष्य रहते है, उस अवचेतन मस्तिष्क तक हम किसी विशिष्ट पध्दति के माध्यम से पहूँच सकते है । इन दो निष्कर्षो के फलास्वरूप मानवीय संवेदनाओं का जन्म होता है । इसी के साथ ही मानवीय प्रवतियों का भी स्वरूप स्पष्ट होता है ।

मनुष्य जब - जब बहुत दुखी होता है अथवा भावूकता की चरमसीमा तक पहुँच जाता है तो उसे संसार की अन्य वस्तु भी उसे दुःखमय प्रतीत होती है। यह मानव का स्वभाव तथा संवेदना है । मनुष्य का चेतन मस्तिष्क जब कार्य करते करते विश्रांत हो जाता है। और नियती के समझ वह स्वयं को असहाय्यसा मानने लगता है, तब प्रकृति उसे अपने समान उद्‌गार व्यक्त करती जान पडती है । प्रकृति के उपादान को एकांत स्थान में किसी जड या चेतन को आपना सहाय्यक मानकर उसे प्रार्थना करता है ।

शिशुकालीन भावनाएँ जो बालिकाओं में अपना स्थान बना लेती है, वे उनके यौवन संचालिका होती है । बच्ची आरंभ से ही प्रेममय वातावरण में पलती है । माता-पिता तथा अपने गुरूजनों का स्नेह और वात्सल्य उसे प्राप्त होता है । एक ओर जब वह बालिका एवं युवा नारी का रूप धारण कर लेती है, तब यही स्नहेपूर्ण व्यवहार आपने पति एवं संतान से चाहती है । जो भी उसके संपर्क में आता है, उन्हे अपना बनाकर रखना चाहती है । दुसरा और जब बाल्यकाल में ही बालीका में प्रेम एवं वात्सल्य के स्थान पर कुछ निकृष्ट विचारधाराचें घर कर जाती है, तब वह बडी होने पर प्रेम के स्थानपर धन को अथवा अन्य किसी विचार को अधिक महत्व देती है । चाहे उन्हें प्रेम न मिलें उनके साथ उनके प्रति या अन्य कोई व्यक्ति प्रेम का व्यवहार न करें केवल उन्हे धन प्राप्त होता रहे, चाहे वह गहनों के ही रूप में ही हो तभी वे संतुष्ट जीवन व्यतीत कर पाती है ।

मनुष्य के प्रौढ जीवन की अनेक विकृतियों असाधारणताओं तथा असंगतियों का मुल उसके जीवन कें प्रथम दो-चार वर्षे के जीवन संघर्ष तथा मानसिक, दमित भावनाओं में निहित रहता है । मनुष्य का समस्त जीवन उसकी बाल-जीवन की प्रमुख प्रवृत्तियों के विकास पर ही निर्भर रहता है

। उसकी प्रवृतियों शक्तियों एवं इच्छाओं के विकास के लिए यदि सुयोग प्राप्त हो जाता है । एव उनका स्वाभाविक विकास रूप से गतिमान होता रहता है, तो उनका भविष्य सुनिश्चित हो जाता है । बालक की वृतियाँ एवं आकांक्षाओं का यदि दमन होता रहता है, साथ हि माता-पिता उसकी और पुरा पुरा ध्यान नही देते है तथा हर समय उनकी इच्छाओं को कुचलते रहते है, या बुरा-भला कहते रहते है, तो बालक में हीनता की ग्रंथियों का धीरे-धीरे जन्म होने लगता है और वे ग्रंथियाँ धीरे-धीरे विकसीत होते रहती है । जो निकट भविष्य में अपने विराट रूप को धारण कर लेती है । इसमें बालक के मानसिक संघर्ष में अभिवृध्दि होती है । उसकी भावनाएँ दमित होकर अचेतन मन से चली जाती है, जो वहाँ स्वयं ग्रंथियों के रूप में विकसीत होती रहती है। बालक की यही ग्रंथियाँ उसके भावी जीवन के वैचारिक करती है ।

मानवीय संवेदनाओ के वैचारिक पक्ष के संदर्भ में अगर हम कहानियों को रखें तो हम इन कहानियों को विभिन्न भागों में बाँट सकते है, वे निम्न प्रकार से है.

१. परिवार से संबंधित मानवीय संवेदनाएँ
२. आर्थिक विपन्नता से संबंधीत मानवीय संवेदनाएँ
३. अभावो से संबंधित मानवीय संवेदनाएँ
४. मानवीय संवेगो से संबंधित मानवीय संवेदनाएँ
५. असहाय्य दांपत्य संबंध से संबंधीत मानवीय संवदेनाएँ
६. रिश्तों में दरार से उत्पन्न मानवीय संवेदनाएँ
७. असहाय्यता से उत्पन्न मानवीय संवेदना
८. विकृतियों से उत्पन्न मानवीय संवेदना
९. आकर्षण / फॅशन परास्तता से उत्पन्न मानवीय संवेदना
१०. आदर / प्रेम / कृतज्ञता के प्रति उत्पन्न मानवीय संवेदना

इन तत्वों, भागों द्वारा कहानियों में व्यक्त मानवीय संवेदनाओं का अध्ययन किया जा सकता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१) हिंदी कहानी का शिल्प विधान – डॉ. राधेशाम गुप्त

२) मंजुल भगत की कहानियों में संवेदनाए - लघु शोध निबंध

३) समकालीन हिंदी कहानी – डॉ. प्रकाश आतुर

४) हिंदी कहानी का इतिहास – डॉ. लालचंद गुप्त

५) हिंदी कहानियों में जीवन मुल्य – डॉ. अरूणा गुप्ता

६) हिंदी के समकालीन महिला उपन्यासकार – डॉ. एम.वेंकटेश्वर

७) सफेद कौआ - मंजुल भगत